नईदुनिया

अमेरिका के कोलोराडो प्रांत में आतंकी हमला, छह प्रदर्शनकारी यहूदी घायल

वाशिंगटन

संयुक्त राज्य अमेरिका के कोलोराडो प्रांत के बोल्डर में रविवार को हुए हमले में कम से कम छह लोग घायल हो गए। सभी छह लोग बुरी तरह झुलसे हुए हैं। इनमें एक की हालत ज्यादा खराब है। संघीय जांच एजेंसी एफबीआई ने कहा कि इसकी आतंकवादी हमले के रूप में जांच हो रही है।

लक्षित हमले को अंजाम देने वाला संदिग्ध स्वतंत्र फिलिस्तीन चिल्लाया और एक फ्लेम थ्रोवर से हमला किया। हमलावर ने यहूदी प्रदर्शनकारियों को निशाना बनाया गया। प्रदर्शनकारी मांग कर रहे थे कि आतंकी समूह हमास बंधकों को रिहा करे। संदिग्ध की पहचान 45 वर्षीय मोहम्मद सबरी सोलिमान के रूप में हुई। उसे गिरफ्तार कर लिया गया है। खबर के अनुसार, इजराइल-हमास युद्ध के बीच अमेरिका में यहूदी समुदाय के खिलाफ बढ़ती हिंसा की शृंखला में यह नया हमला है। यह घटना वाशिंगटन डीसी में कैपिटल यहूदी संग्रहालय के बाहर दो इजराइली दूतावास कर्मचारियों की गोली मारकर हत्या के कुछ दिनों बाद हुई। एनबीसी न्यूज के अनुसार, दो वरिष्ठ कानून प्रवर्तन अधिकारियों ने रात को बताया कि संदिग्ध मोहम्मद सबरी सोलिमन मिस्र का नागरिक है। कोलोराडो के गवर्नर जेरेड पोलिस ने हमले की निंदा की और इसे घृणित कृत्य कहा। उन्होंने कहा कि उम्मीद है कि संदिग्ध पर कानून की पूरी हद तक मुकदमा चलाया जाएगा। यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर हमला है। बोल्डर पुलिस प्रमुख स्टीफन रेडफर्न ने बताया कि एक व्यक्ति की हालत गंभीर है। बाकी लोगों को मामूली चोट आई हैं। चार लोगों को बोल्डर सामुदायिक अस्पताल ले जाया गया और दो को मेट्रो डेनवर में ऑरोरा अस्पताल बर्न यूनिट में एयरलिफ्ट किया गया। विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने एक्स पर कहा कि हम पीड़ितों के लिए प्रार्थना में एकजुट हैं। महान देश में आतंक के लिए कोई जगह नहीं है। सीनेट अल्पसंख्यक नेता चक शूमर ने कहा कि यह भयावह है और यह जारी नहीं रह सकता। हमें यहूदी-विरोधी भावना के खिलाफ़ खड़ा होना चाहिए। एफबीआई निदेशक काश पटेल और होमलैंड सुरक्षा सचिव क्रिस्टी नोएम ने इस घटना को आतंकवादी हमला बताया। व्हाइट हाउस के वरिष्ठ अधिकारियों ने बताया कि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को बोल्डर में हुए हमले के बारे में जानकारी दे दी गई है। सीएनएन की खबर के अनुसार, एफबीआई डेनवर के विशेष एजेंट-इन-चार्ज मार्क मिचलेक ने संवाददाता सम्मेलन में कहा कि संदिग्ध सोलिमन नेअस्थायी फ्लेमथ्रोवर का इस्तेमाल किया और भीड़ में एक आग लगाने वाला उपकरण फेंका। यह घटना बोल्डर रन फॉर देयर लाइव्स इवेंट के दौरान हुई। सभी पीड़ित बुजुर्ग हैं। उन्होंने कहा कि संदिग्ध को 2005 में संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रवेश करने के लिए वीजा देने से मना कर दिया गया था। अभी यह स्पष्ट नहीं हो सका है कि संदिग्ध ने कब या कैसे अमेरिका में प्रवेश किया।

न्यूज ब्रीफ

अमेरिका में दो पुलिस अधिकारियों पर हमला, एक की मौत

वाशिंगटन। संयुक्त राज्य अमेरिका के दक्षिणी कैलिफोर्निया में दो पुलिस अधिकारियों पर शनिवार रात

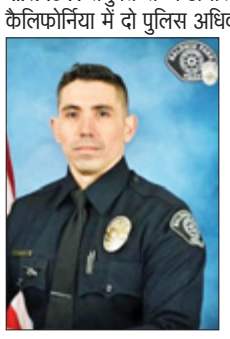

घात लगाकर हमला किया गया। इस हमले में एक अधिकारी की मौत हो गई। यह गोलीबारी लॉस एंजिल्स काउंटी के बाल्डविन पार्क शहर में प्रशांत समयानुसार शाम 7:12 बजे हुई। एबीसी न्यूज की खबर के अनुसार, लॉस एंजिल्स काउंटी के शेरिफ रॉबर्ट जी. लूना ने रविवार आधीरात को प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि दोनों पुलिस अधिकारियों की चेतावनी पर संदिग्ध ने उन पर गोली चला दी। बाल्डविन पार्क के मेयर एलेजांद्रा एविला ने कहा कि हमले में पुलिस अधिकारी सैमुअल रिवरोस की मौत हो गई। लॉस एंजिल्स काउंटी शेरिफ विभाग ने रिवरोस को लिंकन हाइट्स में लॉस एंजिल्स जनरल मेडिकल सेंटर ले जाया गया। सेंटर के डॉक्टर्स ने उन्हें मृत घोषित कर दिया गया। बाल्डविन पुलिस विभाग ने शोक व्यक्त करते हुए कहा कि सैमुअल रिवेरोस बहादुर पुलिस अधिकारी थे। वह हमारी स्मृतियों में वह सदैव जीवित रहेंगे। गोलीबारी में घायल पुलिस अधिकारी एंथनी पिमेंटेल का लॉस एंजिल्स जनरल मेडिकल सेंटर में इलाज चल रहा है। लॉस एंजिल्स काउंटी के शेरिफ रॉबर्ट जी. लूना ने कहा कि संदिग्ध को हिरासत में लिया गया है। उसके पास से राइफल बरामद कर ली गई है।

बांग्लादेश में जमात-ए-इस्लामी ने बहाली के लिए चुनाव आयोग का दरवाजा खटखटाया

ढाका। पाकिस्तान के प्रमुख राजनीतिक दल जमात-ए-इस्लामी ने आज पार्टी के पंजीकरण और चुनाव चिन्ह की बहाली के लिए चुनाव आयोग का दरवाजा खटखटाया है। प्रतिनिधिमंडल ने आयोग को इस संबंध में सुप्रीम कोर्ट के अपीलीय डिवीजन के ताजा आदेश की प्रति भी सौंपी। प्रतिनिधिमंडल और आयोग के अधिकारियों के बीच बैठक अगरगांव स्थित आयोग भवन के सम्मेलन कक्ष में दोपहर 12:15 बजे हुई। इस दौरान मुख्य चुनाव आयुक्त एएमएम नासिर उद्दीन भी मौजूद रहे। खबर के अनुसार जमात के छह सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व सहायक महासचिव हमीदुर रहमान आजाद ने किया। अन्य सदस्यों में पार्टी नेता एडवोकेट अहसानुल महबूब जुबैर, एडवोकेट जसीम उद्दीन सरकार, एडवोकेट मतिउर रहमान अकांदा, मुबारक हुसैन और एडवोकेट मोहम्मद शिशिर मोनिर मौजूद रहे। सुप्रीम कोर्ट के अपीलीय डिवीजन ने रविवार को 2013 के हाई कोर्ट के उस फैसले को रद्द कर दिया, जिसमें जमात के पंजीकरण को अवैध घोषित करते हुए रद्द कर दिया गया था।

यूक्रेन के हमले में ए-50 से टीयू-95 बर्बाद! रूस ने नहीं की पुष्टि, रूस ने जवाबी हमला कर 6 ड्रोन लॉन्चर और 30 यूएवी किए नष्ट

कीव। यूक्रेन ने रूस पर अब तक का सबसे बड़ा ड्रोन हमला किया है। इस हमले में रूस के 40 से ज्यादा युद्धक विमानों को नुकसान हुआ है। रिपोर्ट्स के मुताबिक इस हमले में रूस के अत्याधुनिक ए-50, टीयू-95 और टीयू-22एम3 जैसे बमवर्षक विमानों को टारगेट किया गया। मीडिया रिपोर्ट में यूक्रेनी सूत्रों के हवाले से बताया गया है कि यह हमला रणनीतिक रूप से बेहद अहम था और इसका उद्देश्य रूस की हवाई ताकत को कमजोर करना था। हालांकि रूस की ओर से इतनी बड़ी तबाही की कोई अधिकारिक पुष्टि नहीं की गई है, लेकिन रुस ने जवाबी कार्रवाई जरूर की है। रूस के रक्षा मंत्रालय ने बताया कि उन्होंने यूक्रेन के खार्कोव क्षेत्र में इस्कैंडर-एम मिसाइल से हमला कर 6 ड्रोन लॉन्चर और करीब 30 यूएवी को नष्ट कर दिया है, साथ ही दावा किया गया है कि ड्रोन लॉन्च का स्रोत अब ब्लॉक कर दिया गया है। इस बीच रूस के इरकुत्स्क इलाके में पहली बार ड्रोन हमला किया गया। साइबेरिया स्थित इस इलाके में एक सैन्य यूनिट को निशाना बनाया। इलाके के गवर्नर ने हमले की पुष्टि करते हुए बताया कि सेना और आपातकालीन टीमें मौके पर तैनात हैं और हालात को कंट्रोल में लाने की कोशिश कर रही हैं। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक प्रमुख रणनीतिक हवाई अड्डों पर यूक्रेन के बड़े पैमाने पर ड्रोन हमले के बाद क्रेमलिन में एक आपातकालीन बैठक बुलाई। दूसरी ओर शांति वार्ता से ठीक पहले यूक्रेन सीमा से लगे रूसी क्षेत्रों में दो बड़े पुलों को भी उड़ा दिया।

पाकिस्तान भीख के पैसे से फैलाता है आतंकवाद, भारत को कुचलना आता है

लंदन

भारतीय संसदीय सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने पूर्व केंद्रीयमंत्री और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सांसद रविशंकर प्रसाद के नेतृत्व में यहां पाकिस्तान के चेहरे को बेनकाब किया। लंदन के इंडिया हाउस में रविवार को भारतीय प्रवासियों से मुलाकात में भाजपा सांसद गुलाम अली खटाना ने कहा कि पाकिस्तान एक तरफ भीख मांगता है और दूसरी तरफ आतंकवाद फैलाता है। भारत आतंकवाद को कुचलना जानता है और इसके लिए किसी की मध्यस्थता की जरूरत नहीं है। उन्होंने कहा कि अलग-अलग देशों में हमारे साथी यह संदेश दे रहे हैं। आप (भारतीय प्रवासी) लोग हमारे राजदूत हैं। हम लड़ाई करेंगे।

भारतीय सेना वहां लड़ेगी। हमें कूटनीतिक लड़ाई लड़नी है। सोशल मीडिया की लड़ाई लड़नी है। उन्होंने कहा कि अनुच्छेद 370 के निरस्त होने के बाद कश्मीर में लोकतांत्रिक भागीदारी बढ़ने से पाकिस्तान परेशान है। इसीलिए उसने पहलगाम में आतंकी हमला कराया। भारत ने जब ऑपरेशन सिंदूर से जवाब दिया तो दुनिया में पाखंड फैला रहा है। इस प्रतिनिधमंडल के वरिष्ठ सदस्य पूर्व केंद्रीयमंत्री और वरिष्ठ पत्रकार एमजे अकबर ने कहा कि अहिंसा के पुजारी गांधी जी ने कहा था कि आतंकवाद के खिलाफ अहिंसा नहीं उसका मजबूती से मुकाबला होना चाहिए। भारत आज बापू के बताए रास्ते पर चल रहा है। आज भारत का संदेश स्पष्ट है कि वह कभी पीछे नहीं हटेगा। भाजपा सांसद दग्गुबाती पुरंदेश्वरी ने कहा कि भारत जिम्मेदार राष्ट्र है। उसने कभी किसी दूसरे देश के खिलाफ हथियार नहीं उठाए हैं। पुरंदेश्वरी ने कहा कि पहलगाम में एक महिला ने आतंकवादी से विनती की कि तुमने मेरे पति को मार दिया है, अब मुझे भी मार दो, तो जवाब मिला - हम तुम्हें नहीं मारेंगे, जाओ मोदी को बताओ%। उन्होंने कहा कि इसके बाद दुनिया ने देखा कि पाकिस्तान में क्या हुआ। इस अवसर पर भाजपा सांसद समिक भट्टाचार्य ने कहा कि पाकिस्तान को याद रखना चाहिए कि उसका निर्माण इसलिए हुआ क्योंकि भारत ने गृहयुद्ध नहीं बल्कि शांति का रास्ता चुना।

शिवसेना (यूबीटी) सांसद प्रियंका चतुर्वेदी ने पाकिस्तान पर आतंकवाद को समर्थन देने का आरोप लगाया। उन्होंने याद दिलाया कि कैसे 9/11 हमले का मास्टरमाइंड ओसामा बिन लादेन पाकिस्तान में छिपा हुआ था। भारत का एक प्रतिनिधिमंडल मोनरोविया (लाइबेरिया) पहुंचा है। यहां भाजपा नेता एसएस अहलूवालिया ने कहा कि पाकिस्तान सोचता है कि इस्लामी दुनिया उनके साथ खड़ी होगी। हमने यूएई से कहा कि पाकिस्तान आतंकवाद फैलाने के लिए कुरान और धर्म का इस्तेमाल करता है। उसका कुछ उपाय कीजिए। यूएई ने स्वीकार किया कि पाकिस्तान धर्म का दुरुपयोग कर रहा है। प्रतिनिधिमंडल के दूसरे सदस्य बीजद सांसद सस्मित पात्रा ने कहा कि 22 अप्रैल को पहलगाम में आतंकी हमला हुआ था। आतंकियों ने लोगों का धर्म पूछकर हत्या की। पाकिस्तान जब तमाशबीन बना रहा तो भारत ने 6 और 7 मई की मध्य रात पाकिस्तान में नौ आतंकी ठिकानों को तहस-नहस कर दी। भाजपा सांसद बांसुरी स्वराज ने कहा कि लाइबेरिया हमारा पुराना मित्र है। व संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के अस्थायी सदस्य के लिए चुनाव लड़ेगा। ऐसा लगता है कि डीआर कांगो और लाइबेरिया दोनों ही अस्थायी सदस्यों की सीटें जीतेंगे। एक अच्छे मित्र के रूप में लाइबेरिया आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक लड़ाई में भारत के साथ खड़ा रहेगा। मैड्रिड (स्पेन) में भाजपा नेता कैप्टन बृजेश चौटा ने कहा कि भारत पिछले कई सालों से पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद को झेल रहा है। पहलगाम में जो हुआ, उसने धैर्य का बांध तोड़ दिया। यूरोपीय संघ में भारत के पूर्व राजदूत मंजीव सिंह पुरी ने कहा कि आतंकवाद के भूगोल में पाकिस्तान बहुत बड़ा देश है। उसे दुनिया ने लगातार पहचाना है, चाहे आप 9/11 को लें, या फिर कोई भी बड़ी वैश्विक कार्रवाई को, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पाकिस्तान का हाथ हमेशा रहा है।

गर्भपात गोली के आविष्कारक बौलियू का निधन, बदला करोड़ों महिलाओं का जीवन

रोम

फ्रांसीसी वैज्ञानिक एटियेन-एमिले बौलियू, जिन्हें गर्भपात की गोली के आविष्कारक के रूप में जाना जाता है उनका 98 साल की आयु में शुक्रवार को पेरिस में निधन हो गया था। उनके संस्थान ने एक बयान जारी कर इसकी जानकारी दी। एक डॉक्टर और एक रिसर्चर दोनों, बौलियू स्टेरॉयड हार्मोन पर अपने काम के साइंटिफिक, मेडिकल और सोशल सिग्नीफेंस के लिए दुनिया भर में जाने जाते थे। इंस्टीट्यूट बौलियू ने अपनी वेबसाइट पर पोस्ट में कहा कि उनका रिसर्च साइंस द्वारा संभव की गई प्रगति के प्रति उनके लगाव, महिलाओं की स्वतंत्रता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और सभी को बेहतर, लंबा जीवन जीने में सक्षम बनाने की उनकी इच्छा से प्रेरित था।

बौलियू का जन्म 12 दिसंबर, 1926 को स्ट्रासबर्ग में हुआ था। उस वक्त उनका नाम एटिएन ब्लम था, लेकिन 15 साल की आयु में नाजी कब्जे के खिलाफ फ्रांसीसी प्रतिरोध में शामिल होने पर अपना नाम उन्होंने 'एमिले बौलियू' रख लिया था। 1955 में मेडिकल में डॉक्टरेट और 8 साल बाद साइंस में डॉक्टरेट की उपाधि हासिल करने वाले एंडोक्रिनोलॉजिस्ट बौलियू ने 1963 में फ्रांसीसी हैल्थ और मेडिकल रिसर्च इंस्टीट्यूट में हार्मोन पर काम करने वाली एक अग्रणी शोध इकाई की स्थापना की। वे 1997 तक इकाई के प्रमुख रहे। उन्हें 1982 में आरयू 486 के विकास के लिए जाना जाता है, जिसे गर्भपात की गोली कहा जाता है, जिसने दुनिया भर में लाखों महिलाओं के जीवन को बदल दिया, उन्हें फिजिकल और साइकोलॉजिकल सिक्योरिटी में वॉलंटरी मेडिकल टर्मिनेशन ऑफ प्रेग्नेंसी की संभावना प्रदान की। उनकी खोज के बाद रिसर्चर को महिलाओं के गर्भपात के अधिकारों के विरोधियों से तीखी आलोचना और यहां तक कि धमकियों का भी सामना करना पड़ा था। संस्थान ने कहा था कि आज भी इस पद्धति का विरोध किया जा रहा है, कुछ देशों में इस पर प्रतिबंध है और वर्तमान में संयुक्त राज्य अमेरिका में इसे चुनौती दी जा रही है, जहां यह सबसे व्यापक रूप से इस्तेमाल की जाने वाली गर्भपात पद्धति है।

फैशन आर्ट टोरंटो फैशन वीक

कनाडा में फैशन आर्ट टोरंटो फैशन वीक में भाग लेते हुए बच्चे।

भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने अल्जीरिया में अमीर अब्देलकादर को दी श्रद्धांजलि

अल्जीयर्स

भारत और अल्जीरिया के ऐतिहासिक एवं कूटनीतिक संबंधों को और मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल करते हुए सांसद बैजयंत पांडा के नेतृत्व में एक सर्वदलीय भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने अल्जीरिया के राष्ट्रीय नायक अमीर अब्देलकादर को श्रद्धांजलि अर्पित की।

प्रतिनिधिमंडल ने राजधानी अल्जीयर्स स्थित विलाया डीअल्गर एटाब्लिस्समेंट डी गेस्टियन डेस पोम्पेस फनेब्रेस एट सिमेटिएरेस का दौरा किया और आधुनिक अल्जीरियाई राष्ट्र के संस्थापक माने जाने वाले अमीर अब्देलकादर की समाधि पर पुष्पांजलि अर्पित की। अमीर अब्देलकादर को फ्रांसीसी औपनिवेशिक शासन के खिलाफ संघर्ष और अल्जीरिया की स्वतंत्रता की नींव रखने के लिए व्यापक सम्मान प्राप्त है।

इस अवसर पर सांसद बैजयंत पांडा ने कहा, कि अमीर अब्देलकादर को श्रद्धांजलि देना केवल एक औपचारिकता नहीं, बल्कि उन साझा मूल्यों का सम्मान है जिन पर भारत और अल्जीरिया के स्वतंत्रता संग्राम आधारित रहे हैं। यह श्रद्धांजलि हमारे द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करती है और एक-दूसरे की आजादी की लड़ाई के प्रति गहरा सम्मान दर्शाती है।

द्विपक्षीय कूटनीति को नया आयाम

इस दौरे को भारत-अल्जीरिया के बीच संसदीय कूटनीति, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और परस्पर सम्मान को बढ़ावा देने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। प्रतिनिधिमंडल की यह यात्रा द्विपक्षीय संवाद को और गहरा करने, सहयोग को विविध क्षेत्रों में विस्तारित करने और जन-जन के बीच आपसी समझ को बढ़ाने की पहल का हिस्सा है।

बांग्लादेश में करेंसी से हटाई शेख मुजीब की तस्वीर, नई करेंसी जारी

ढाका

बांग्लादेश बैंक ने नई करेंसी जारी की है जिसमें दशकों से मौजूद राष्ट्रपिता शेख मुजीबुर रहमान की तस्वीर को हटा दिया गया है, उसकी जगह धार्मिक स्थलों विशेष रूप से मस्जिदों की तस्वीरें छापी गई हैं। करेंसी में मंदिर की तस्वीरें भी लगाई है, लेकिन सवाल एक प्रमुख मस्जिद की तस्वीर को लेकर, जिसे लेकर विपक्ष, बुद्धिजीवी और आम नागरिक सवाल पूछ रहे हैं। क्या यह नया बांग्लादेश है या तालिबानी सोच की वापसी

1971 के मुक्ति संग्राम में पाकिस्तान से आजादी दिलाने वाले शेख मुजीब बांग्लादेश की पहचान थे। उनके चेहरे वाला नोट सिर्फ करेंसी नहीं था बल्कि एक विचार था, लेकिन अगस्त 2024 में शेख हसीना की सरकार के पतन के बाद सत्ता में आई नई सरकार का रुख अब इस पहचान

करेंसी में मस्जिद-मंदिर की तस्वीरें, विपक्ष व नागरिक पूछ रहे सवाल

को मिटाने में लगा है। सिर्फ करेंसी नहीं कई सरकारी इमारतों, संस्थानों और सड़कों से भी शेख मुजीब से जुड़ी पहचान को हटाने की प्रक्रिया शुरू हो गई है। बांग्लादेश बैंक ने 9 में से 3 नोटों की नई सीरीज जारी की है। इसमें न किसी नेता का चेहरा है, न राष्ट्रपिता की छवि। करेंसी में मस्जिद बौद्ध विहार, मंदिर और बंगाल अकाल पर आधारित एक प्रसिद्ध चित्र को। हालांकि जहां एक ओर ये विविधता प्रतीत होती है, वहीं मस्जिद की प्रमुखता को लेकर यह आलोचना हो रही है कि धार्मिक एजेंडा को 'राष्ट्रीय प्रतीकों' पर थोपने की कोशिश की जा रही है। पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना पर इंटरनेशनल क्राइम्स ट्रिब्यूनल में मानवता के खिलाफ अपराधों का केस दर्ज हो चुका है. उन पर 2024 के छात्र आंदोलनों को कुचलने के आरोप हैं जिसमें 1400 से अधिक मौतें हुईं. लेकिन ध्यान देने वाली बात यह है कि नई सरकार जिसने अब तक खुद को लोकतांत्रिक बताया है न तो इस केस पर कोई पारदर्शिता दिखा रही है और न ही शेख हसीना के विरोध में हुई कार्रवाइयों की निष्पक्ष जांच की बात कर रही है. राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि बांग्लादेश में यह बदलाव किसी सुधार की दिशा में नहीं बल्कि आइडेंटिटी वाइपआउट की रणनीति की तरह लग रहा है. नई सरकार न सिर्फ पुराने शासन के प्रतीकों को हटाने में लगी है, बल्कि अपने धार्मिक और वैचारिक एजेंडे को 'राष्ट्रीय गौरव' के नाम पर थोप रही है. बांग्लादेश कभी भी तालिबान जैसा कट्टरपंथी देश नहीं रहा. लेकिन आज जो बदलाव वहां की नीतियों, प्रतीकों और सरकार के कामकाज की शैली में देखने को मिल रहा है, वह उस ओर इशारा जरूर कर रहा है।